संस्मरण

# झरल आम अब झरल पताई गौतम जी!

जगदीश पीयूष

भाई कैलाश गौतम की बात कहां से शुरू करूं समझ में नहीं आता। लगभग 35 वर्षों से हम एक दूसरे से अभिन्न रहे हैं। मेरी पहली मुलाकात राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी ने करायी थी। 1974 के आसपास मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के एक कार्यकम में इलाहाबाद गया था, वहां रामभवन चौराहे के निकट एक कोठी की ऊपरी मंजिल पर द्विवेदी जी ठहरे थे। मैं पं. रामनरेश त्रिपाठी के संदर्भ में एक पुस्तक संपादित कर रहा था, मेरा द्विवेदी जी से पत्र व्यवहार हो चुका था। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने पास बैठे भाई कैलाश गौतम से मेरा परिचय कराया। द्विवेदी जी के आदेश पर मैंने अपना एक नवगीत सुनाया जिसे गौतम जी ने सराहा। द्विवेदी जी ने मुझे गौतम जी के सान्निध्य में रहने की सलाह दी और वहीं से मैं कैलाश जी के घर उनके साथ गया। भाभी जी पहली ही मुलाकात से हमारी अत्यन्त आदरणीया बन गयीं। उनकी हंसी ठिठोली, उनका भोजन, जलपान हमें तब से अब तक मिल रहा है। हम सब उसी स्नेह से एक दूसरे से बंधे रहे। मेरा इलाहाबाद जाना बिना उनके घर गये और आकाशवाणी केन्द्र के सामने की फुटपाथी दुकान पर बैठे, गप्प सड़ाके किये नहीं होता था।

उन दिनों प्रतिवर्ष मैं कई–कई कवि सम्मेलनों का आयोजन करता था, जिसमें बेघड़क बनारसी, दूधनाथ शुक्ल 'करुण', चन्द्रशेखर मिश्र, नीलम जी, चकाचक बनारसी, लक्ष्मीनारायण प्रवासी, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, बृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल', आद्या प्रसाद मिश्र 'उन्मत्त', विकल साकेती, रूप नारायण त्रिपाठी, श्रीपाल सिंह 'क्षेम', बुद्धिनाथ मिश्र, जुमई खां आजाद, पं. श्यामनारायण पाण्डेय, सूड़ फैजाबादी व भाई कैलाश गौतम आदि के बिना नहीं होता था। देश में जब आपातकाल लागू था और अमेठी में स्व. संजय गांधी के आगमन की आहट थी, सरकारी तंत्र संजय जी के अमेठी क्षेत्र के प्रति भी मुस्तैद था, उस समय अमेठी क्षेत्र आकाशवाणी इलाहाबाद के अन्तर्गत था। इसलिए दौरे पर भी गौतम जी का आना होता था। एक बार तो वे आदरणीय केशवचन्द्र वर्मा जी के साथ सुलतानपुर बस अड्डे पर मिल गये, मेरा मन उनके स्वागत के लिए उमड़ा हालांकि स्वागतार्थ पैसे जेब में नहीं थे। मैं उन्हें अवंतिका होटल पर बैठाकर खन्ना बुक स्टाल पर गया और मित्र पत्रकार राज खन्ना के बड़े भाई से 50 रुपये उधार लाकर उनका इडली–डोसा आदि से सत्कार किया। केशवचन्द्र वर्मा आकाशवाणी इलाहाबाद के प्रमुख तो थे ही लोक साहित्य, अवधी साहित्य और नाट्य साहित्य पर काफी काम भी किया है।

उनका प्रोत्साहन भी मुझे बहुत मिलता था। एक बार मुझे आकाशवाणी लखनऊ में स्व. पण्डित कमलापति मिश्र के सौजन्य से अमेठी के विकास पर प्रकाश डालने के लिए वार्ता का आमंत्रण मिला, तब तक संजय गांधी का आगमन अमेठी हो चुका था। अमेठी में विकास की नई संभावनाओं पर बेतहाशा चर्चा व कार्य शुरू हो चुके थे लेकिन मुझे वार्ता प्रस्तुत करने का कोई अनुभव नहीं था। गौतम जी ने मुझे पूरी वार्ता ही लिखा दिया था जिसमें सीधे–सीधे अमेठी की गलियों में कीचड़ में फंसा हुआ पांव संजय गांधी की बदौलत उड़नखड़ाऊं पहनकर अमेठी के विकास को अन्तरिक्ष से जोड़ रहा था। वार्ता तो जम गयी लेकिन जब उसे ट्रांजिस्टर से राजर्षि रणंजय सिंह ने सुना तो मेरी काफी खिल्ली भी उड़ायी राजा साहब एक बार और नाराज हुए डॉ. संजय सिंह पर, जब आकाशवाणी के लिए गौतम जी को इण्टरव्यू देते हुऐ डॉ संजय सिंह ने यहां तक कह दिया कि राजा लोग गरीबों का खून चूसते हैं। हालांकि उन्होंने बात दूसरे संदर्भ में कही थी लेकिन प्रसारण को सुनकर दयालु और गरीबों के हितैषी राजर्षि रणंजय सिंह को दुःख पहुंचा।

जब मैं स्व. राजीव गांधी के लिए प्रचार कार्य में लगा तो हमें 'बेकअप' करने में भाई कैलाश गौतम का बहुत ही सहयोग था। 1984 के चुनाव में अमेठी की हर दीवाल पर हमने रंग–विरंगे नारे लिखवा दिये थे जिसकी देशी और अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में जमकर चर्चा हुई। उसके साथ ही हमने चुनावी गीतों के कैसेट तैयार कराये, वीडियो फिल्म भी तैयार कराये, उनके गाने और संवाद भी तैयार कराये। इन सबके निर्माण में कैलाश जी का हमें भरपूर सहयोग मिला था। एक बार तो उन्होंने अपने घर पर ही कलाकारों को बुलाकर रिकार्डिंग कराई थी। इस सबमें कभी भी हम पार्टी या राजीव जी का आर्थिक सहयोग नहीं स्वीकारते थे, इसलिए गौतम जी के कारण मामूली व्यय पर कलाकारों का तथा पंडित चन्द्रशेखर मिश्र जैसे महाकवियों का सहयोग मिल जाता था और कांग्रेस के नेताओं में मेरा रंग चोखा बन जाता, लोग समझ ही नहीं पाते हम कहां से क्या कर रहे हैं।

30 अक्टूबर, 1984 को इंदिरा जी शहीद हुई। 1 नवम्बर को हमारे अमेठी समाचार अखबार का राजीव जी को एक बड़ी जनसभा में विमोचन करना था जिसे कवर करने के लिए कैलाश जी को भी आना था। विभा मिश्रा जी आदि कई लोग 30 अक्टूबर की रात हमारे यहां आ चुके थे। किन्तु उस दुर्घटना के नाते वे नहीं आ पाये थे। किन्तु उसी सप्ताह वे व्यक्तिगत समय निकालकर आये थे। एक बार अमेठी में अवधी अकादमी की ओर से श्री रवीन्द्र कालिया जी की प्रेरणा से राजर्षि रणंजय सिंह का सम्मान व बड़ा कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें पं. श्यामनारायण पाण्डेय, कन्हैयालाल नंदन, लीलाधर जगूड़ी जैसे बड़े–बड़े दिग्गज कवि आये थे। उसका संचालन भी कैलाश जी ने किया। रात में ट्रेन पकड़ना था, मैंने दारू की कुछ बोतलें पत्रकारों और कवियों के हितार्थ मंगायी थी जिसे गौतमजी ने ठिठोली करने के लिए महाकवि व हल्दीघाटी के अमरगायक पं. श्यामनारायण पाण्डेय के झोले में छिपा दिया था पर सुश्री विभा मिश्रा की चुगली पर पाण्डेय जी ने सब कुछ जान लिया तथा उन्हें बहुत डांट पिलायी।

कैलाश गौतम कवि मंचों के बेताज बादशाह होते थे। आपातकाल में 'दादा आन्हर, माई आन्हर' कविता जो उनके आपातकाल के विरोध में लिखी थी, बहुत ही प्रसिद्ध हुई। भारत सरकार की सेवा में होते हुए भी उन्होंने कभी अपने रचनाकर्म से समझौता नहीं किया। उन्होने नये प्रतीकों, नयी सोच और नये प्रयोग के रूप में दोहे लिखे ये दोहे इतने चर्चित हुए कि हर बड़ी पत्रिका गौतम जी के दोहों को अपने मुखपत्र पर छापने के लिए लालायित रहने लगी। उन्होंने नवगीत लिखे, गजलें लिखीं, गीत लिखे और भोजपुरी अवधी के सम्मिश्रण से बनारस की जो बोली है, उसमें लिखी हुई उनकी कविताएं, कचहरी, गांव गया था गांव से भागा, पप्पू की दुलहिन, अमौसा का मेला आदि कालजयी रचनाओं के माध्यम से सदैव याद किये जायेंगे।

हिन्दुस्तान अकादमी के अध्यक्ष होने पर उसका खास संकल्प लोक भाषाओं के प्रोत्साहन हेतु था उन्होंने अकादमी के माध्यम से पं. रामनरेश त्रिपाठी, आद्या प्रसाद उन्मत्त और जगदीश पीयूष पर संगोष्ठी का आयोजन कराया। जब मेरी अवधी पुस्तक 'अंधरे के हाथ बटेर' पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान का जायसी पुरस्कार मिला तो वे बहुत ही प्रसन्न हुए। वे मेरे निजी विकास तथा साहित्यिक विकास दोनों के प्रति बहुत ही शुभेच्छु थे।

सोनिया जी के जन्म दिवस पर तीनमूर्ति भवन में मेरी पुस्तक का विमोचन था जिसमें गृहमंत्री माननीय शिवराज पाटिल, माननीय अर्जुन सिंह, मुख्यमंत्री शीला दीक्षित जैसे सैंकड़ों प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे, कैलाश जी मेरी इच्छा पर समय निकालकर वहां भी पहुंचे तथा ललकार कर कविता पढ़ी। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन वे हमारे अन्तःकरण में सदैव जगमगाते रहेंगे।

सम्पर्क–
सृजनपीठ, गौरीगंज
सुलतानपुर (उ.प्र.)

('नये–पुराने' कैलाश गौतम स्मृति अंक, जुलाई 2007 से साभार)